अथर्ववेदीय आदिसूक्त पर आयुर्वैदिक दृष्टि

Sudha Singh

Banaras Hindu University, Varanasi-5

Abstract

The Vedas are the essence of entire knowledge and thought. Concept of Ayurveda has been dealed in Rigveda, but Atharvaveda deals it basic principles. Atharvaveda mentions that this human body is consists of three faults vata, pitta and kapha and seven materials blood, fluid, flash, bone marrow and semen present paper deals the principle and application of Ayurveda mentioned in Atharvaveda.

'वेद समस्त सत्य विद्याओं के सार हैं।' स्वामी दयानन्द सरस्वती की यह उक्ति सर्वदा सत्य रही है। किन्तु अथर्ववेद के सन्दर्भ में यह उक्ति हमारे समक्ष मूर्तिमती हो जाती है, जब हम आयुर्वेद जैसे विशाल साहित्य को अथर्ववेद से निःसृत उपवेद के रूप में पाते हैं। यद्यपि आयुर्वेद के दर्शन हमें ऋग्वेद के प्रथम एवं दशम मण्डल में ही प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु जितने विस्तार से यह अथर्ववेद में पाया जाता है, उतना किसी अन्य वेद में नही पाया जाता है। यही कारण है कि आयुर्वेद को अथर्ववेद के उपवेद के रूप में मान्यता मिल गई है।[१] इस तथ्य को आयुर्वेद के आचार्यत्रय ने भी मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है।

अथर्ववेद के कई नाम प्राप्त होते हैं, जिनमें इसे क्षत्रवेद[२] और भैषज्यवेद[३] भी कहा जाता है। क्षत्रवेद का तात्पर्य है क्षति से बचाने वाला वेद- क्षतात् त्रायते। भेषज्यवेद नाम प्राप्त होने का कारण यह है कि इसमें औषधि, रोग, चिकित्सक, एवं चिकित्सा का ज्ञान है।

अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र हमें आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों से परिचय कराता है, जो कि त्रिदोष-सिद्धान्त एवं सप्तधातु सिद्धान्त हैं। तन दोष-वात, पित्त और कफ, तथा सात धातुएँ- रस रक्त मांस मेद अस्थि मज्जा और शुक्र आदि हैं।

अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र कहता है कि-

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।

अर्थात् तीन और सात का यह जो संयोग अथवा समुच्चय विश्व के समस्त रूपों को धारण करता हुआ गतिशील है, वाणी का पति सोम या इन्द्र उनके बलों को हमें प्राप्त कराएँ।

यहाँ प्रश्न उठता है कि यहाँ त्रिषप्ताः पर तीन दोषों एवं सात धातुओं का वाचक क्यों माना जाय? जब कि तीन के उदाहरण के रूप में हमारे समक्ष तीन गुण के रूप में सत्त्व, रज एवं तम, तीन काल वर्तमान भूत और भविष्य, तीन देव के रूप में ब्रह्मा विष्णु एवं महेश आदि प्राप्त होते हैं, तथा सात के उदाहरणार्थ सात किरणें,सात लोक आदि भी दृष्टिपात करना पड़ता है। सायण और कौशिक इत्यादि ने क्या माना है? वेद एवं सूक्त के नामकरण के साथ अर्थ की संगति करने पर इस मन्त्र का तात्पर्य हमारे समक्ष प्रकट हो जाता है।

आचार्य सायण ने तीनों के उदाहरणार्थ पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक, आदि तीन लोक, उनके अधिष्ठाता आदि अग्नि, वायु और सूर्य और ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर को प्रस्तुत किया है। सात के उदाहरण के रूप में आचार्य सायण सात ऋषियों, सात ग्रहों, सात मरुद्गणों, भूः भुवः स्वः, महः जनः आदि सात लोकों तथा सात छन्दों को लिया है।[४] तथा इस मन्त्र का विनियोग कौशिक गृह्यसूत्र के अनुसार माना है।[५]

ध्यातव्य है कि इस मन्त्र के सूक्त का नाम मेधाजनन सूक्त है, और इस मेधाजनन अंर्थात् बुद्धिशक्ति को उत्पन्न करने के लिए कौशिक गृह्यसूत्रकर्ता शुक-सारिका अर्थात् तोता मैना आदि पक्षियों की जिह्वा बाँधने और खिलाने आदि का विधान करते हैं,[६] जो कि मन्त्र की आत्मा के साथ अत्याचार की भाँति प्रतीत होता है। सम्भव है, ऐसे टोने-टोटके से मेधाजनन होता हो किन्तु इस अर्थ एवं प्रयोग की अपेक्षा आयुर्वेद परक अर्थ अधिक संगत प्रतीत होता है। गोपथ ब्राह्मण स्वयं कहता है अथर्वा ऋषि के द्वारा दृष्ट मन्त्र भेषजपरक है[७] इसलिए अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट इस मन्त्र पर आयुर्वैदिक दृष्टि से विचार करना आवश्यक हो जाता है। मन्त्र का पूर्वार्द्ध कहता है कि तीन और सात का ये समुच्चय समस्त रूपों को धारण करता हुआ

Vijnana Bharati

सम्यग्रूपेण मतिमान है, आयुर्वेद भी ऐसा ही मानता है। आचार्य सुश्रुत कहते हैं कि जिस तरह से विसर्ग आदान और विक्षेप के द्वारा सोम सूर्य और वायु जगत् का धारण एवं पोषण करते हैं उसी तरह से कफ पित्त और वात भी देह को धारण करते हैं।[८]

आचार्यत्रयी के अन्तर्गत आचार्य चरक और सुश्रुत जहाँ वैदिक मतानुयायी हैं वहीं आचार्य वाग्भट बौद्धमतानुयायी होते हुए भी इसका पूर्णरूपेण समर्थन करते हैं। अष्टाङ्गसंग्रह के प्रारम्भ में ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे इस मन्त्र की व्याख्या कर रहे हों। उनका कथन है कि आयुर्वेदका उपजीव्य है-

आयुषः पालकं वेदमुपवेदमथर्वणः।

कायबालग्रहोर्ध्वाङ्गशल्यदंष्ट्राजरावृषैः।

साथ ही वे प्रतिज्ञा भी करते हैं कि अष्टाङ्ग संग्रह के विषयों का उपस्थान पूर्व से चली आ रही परम्परा जो कि वेद से चरक सुश्रुतादि तक है, के अनुसार ही है। इसमें मात्रामात्र भी भिन्नता नहीं है-

न मात्रामात्रमप्यत्र किञ्चिदागमवर्जितम्।[१०]

इससे यह प्रतीत होता है कि त्रिषप्ता पद को व्याख्यात करने के लिए ही वे त्रिदोषों के पश्चात् ही सप्त धातुओं का भी विवेचन कर देते हैं-

वायुः पित्तं कफश्चेति त्रयो दोषाः समासतः।

प्रत्येकं ते त्रिधा वृद्धिक्षयसाम्यविभेदतः।।

उत्कृष्टमध्यात्मतया त्रिधा वृद्धिक्षयावपि।

विकृताऽविकृता देहं घ्नन्ति ते वर्धयन्ति च।।

पुनः-

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जशुक्राणि धातवः।

.....

शरीरं धारयन्त्येते धात्वाहारश्च सर्वदा।

वृद्धिः समानैः सर्वेषां विपरीतैर्विपर्ययः।।

मन्त्र जब कहता है कि विश्वा रूपाणि बिभ्रतः तब आशय समस्त प्राणियों के शरीरों से होता है, चाहे वह मनुष्य हो अथवा पशु हो अथवा पादप, अर्थात् स्थावर तथा जंगम समस्त प्राणियों के लिए ये त्रिदोष सिद्धान्त विहित है। वृक्षों की छाल, रस और काष्ठ से मनुष्यों के रस रक्त और अस्थि आदि धातुओं की तुलना करते हुए बृहदारण्यक उपनिषद् भी यही घोषित करता है। विभिन्न शास्त्रों के संकलनकर्ता आचार्य शार्ङ्ग ने न केवल वृक्षों में भी बात पित्त और कफ दोष के कारण रुग्ण, इन दोषों से पीड़ित वृक्षों आदि का लक्षण बताया है अपितु उनका उपचार बतलाया है।

मन्त्र के उत्तरार्ध में वाचस्पति से बल प्रदान करने की प्रार्थना की गई है और शेष अन्य मंत्रों में भी इस ज्ञान के संरक्षण तथा पोषण की प्रार्थना की गई है। मन्त्र के देवता भी वाचस्पति ही हैं। वाचस्पति विशेषण विशेषतः इन्द्र (मन) के लिए प्रयुक्त होता है। तथा इसका सम्बन्ध सोम से भी बताया गया है। आचार्य सायण यहाँ पर वाचस्पति शब्द को ब्रह्मा का वाचक मानते हैं।

इन तीनों की दृष्टियों से इस मन्त्र का आयुर्वेप्रतिपादकत्व सिद्ध होता है। क्योंकि आयुर्वेद की आचार्य परम्परा में देवराज इन्द्र भूलोक के लिए प्रथम आचार्य हैं। उन्होंने ही समस्त ऋषियों को आयुर्वेद का उपदेश दिया।

यदि सोम को स्वीकार करें तो सोम को समस्त औषधियों का स्वामी माना गया है। और अन्ततोगत्वा सायण को मानें तो आयुर्वेद के प्रथम उपदेष्टा पितामह ब्रह्मा ही हैं। यह तथ्य भी पूर्वोक्त अर्थ को ही पुष्ट करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अथर्ववेद का यह प्रथम मन्त्र आयुर्वेद विषय-उपस्थापक व्याख्यान (Introductory lecture) के रूप में है जो कि अथर्ववेद के भैषज्यवेद नाम को सार्थक करते हुए अपने सूक्त के नाम को भी सार्थक करता है।

सन्दर्भ :

१. आचार्य बाग्भट, अष्टाङ्गसंग्रह, सूत्रस्थान ९,१।

२. उक्थं .....यजु.....साम...क्षत्रं....वेद। श०ब्रा० १४.८.१४.२-४।

३. ऋचः सामानि भेषजा। यजूंषि होता ब्रेम। अथर्व० ११.६.१४।

४. सायण भाष्य १.१।

५. सायण भाष्य १.१.१।

६. शुकसारिकृशानां जिह्वा बध्नाति, आशयति आदि। कौशिक गृह्य सूत्र, २, १-३।

७. गोपथ ब्रा० १, ३, ४।

८. सुश्रुत, सूत्र० २१, ८।

९. अ० सं० सूत्र० १, १०।

१०. वही १, २२।

Vijnana Bharati